Rigveda Yajurveda

Samaveda Atharveda

(KNOWLEDGE FROM THE VEDAS)

आर्य प्रतिनिधि सभा फीजी - प्रचार कमीटी

अंक २५

संस्कार

विवाह संस्कार

पिछले अंक से आगे

वैदिक धर्म में संस्कारों का बड़ा महत्व है। मानव जीवन को उच्च, दिव्य, महान् एवं सुसंस्कृत बनाने के लिए महर्षि दयानन्द ने 'संस्कारविधि' में सोलह संस्कारों का विधान किया है। सभी संस्कार महत्वपूर्ण है परन्तु उन सभी में विवाह-संस्कार सबसे अधिक महत्वपूर्ण है। वस्तुत: यही वह संस्कार है जो अन्य सभी संस्कारों का आधार है।

वर्तमान समय में संस्कारों की ओर मनुष्य का ध्यान बहुत ही कम है। आज सोलह संस्कारों के स्थान पर दो-तीन संस्कार ही रह गये है और वे भी विधि पूर्वक नहीं कराये जाते। वर-वधू पक्ष के लोग तो खाने और खिलाने को ही मुख्य समझते है तथा संस्कार के प्रति यही इच्छा होती है कि कम से कम समय में समाप्त हो जाये।

युवा अवस्था का विवाह

पुरुष २५ तथा कन्या १८-२० वर्ष के बाद युवा अवस्था में प्रवेश करती है। इस अवस्था में विवाह करने के अनेक लाभ है।

(१) ये विवाह अपनी पूरी जिम्मेदारी को समझ कर होते है - २५ या इससे अधिक आयु के युवक तथा १८-२० वर्ष की युवती के विवाह का यह लाभ है कि ऐसे विवाह

खूब देख-भाल कर होते है , पुरुष तथा कन्या के रजामन्दी से होते है , इस लिए इनकी जिम्मेदारी पति-पत्नी पर आ पड़ती है , माता-पिता पर नहीं आती। अगर इन लोगों की आगे जाकर नहीं बनती , तो वे किसी दूसरे को दोषी नहीं ठहरा सकते।

(२) शारीरिक तथा मानसिक परिपाक की अवस्था - इस अवस्था में पुरुष तथा स्त्री के अपने शरीर की जितनी वृद्धि होनी होती है हो चुकती है , इसलिए इस आयु का विवाह मनुष्य के अपने शारीरिक विकास में बाधा नहीं पहुँचाता। इस परिपक्व शरीर से जो सन्तान होती है , तन्दुरुस्त होती है। कच्चे शरीर से कच्ची सन्तान और परिपक्व शरीर से परिपक्व सन्तान होना उचित ही है। शारीरिक परिपाक की तरह इस आयु में मानसिक परिपाक भी हो जाता है जो गृहस्थ को भली प्रकार निभाने के लिए आवश्यक है।

धार्मिक विधि विधान - वैदिक विवाह एक धार्मिक संस्कार है , ठेका नहीं , इसलिए इसमें संस्कार के तौर पर अनेक ऐसे विधि विधान किये जाते है , जिससे विवाह की धार्मिकता की नीव दृढ़ हो जाती है। उदाहरण के लिए वेद मन्त्र पढ़े जाते है , अग्नि को साक्षी रखकर विवाह किया जाता है , विवाह में 'फेरे , सप्तपदी आदि विधियां की जाती है , सगे सम्बन्धियों को बुला कर सब के सामने संस्कार किया जाता है।

वैदिक धर्मियों में विवाह का जो धार्मिक संस्कार किया जाता है उसकी रूप-रेखा नीचे दिया जा रहा है।

विवाह में पत्नी का स्थान

विवाह में महर्षि दयानन्द ने पत्नी का स्थान सर्वत्र पति के दाहिनी ओर माना है। 'लाजाहोम 'की विधि होने के पश्चात् ऋषि लिखते है - ' पश्चात् वर, वधू को दक्षिण (right) भाग में रखके कुण्ड के पश्चिम में पूर्वाभिमुख बैठके वर-' ओं प्रजापतये स्वाहा ...' इस मन्त्र को बोल के चम्मच से एक घृत की आहुति देवे ।'

विवाह विधि पूर्ण होने के पश्चात् जब वर और वधू प्रस्थान करते है , वहां ऋषि लिखते है - ' और रथ में बैठते समय वर अपने साथ दक्षिण बाजू (right hand) वधू को बैठावे ।'

इतना ही नहीं , महर्षि दयानन्द ने तो घर पहुँचकर जो यज्ञ होता है , वहां भी पत्नी को दक्षिण भाग (right side) में बैठाने का निदेश किया है -

" यज्ञकुण्ड के पश्चिम भाग में पीठासन (बैठने का आसन) पर वधू को अपने दक्षिण भाग में पूर्वाभिमुख (facing the sun) बैठावे ।'

वैदिक विवाह - एक विवेचन

गृहस्थाश्रम सब आश्रमों में मुख्य और श्रेष्ठ है। इस आश्रम का आरम्भ विवाह से होता है।

वैदिक धर्म में वर और वधू के गुण-कर्म-स्वभाव का मिलान करने पर बड़ा बल दिया गया है। पाश्चात्य डाक्टर मैगनस हिर्श फील्ड (DR. Magnus Hirsh Field) ने भी इस विषय में बहुत सुन्दर लिखा है -

Happy marriages are not made in heaven but in the laboratory. Both the man and woman should be carefully examined not only with regard to their fitness to marry but whether they are fit to marry each other.

अर्थात् सुखी विवाह स्वर्ग में नहीं अपितु रसायनशालाओं में होते है। पुरुष और स्त्री की वहां जांच होनी चाहिए, न केवल इस सम्बन्ध में कि वे विवाह के योग्य है , अपितु इस सम्बन्ध में भी कि वे दोनों एक दूसरे को प्रसन्न रखने की योग्यता भी रखते हैं या नहीं।

विवाह संस्कार

गृहस्थाश्रम में प्रवेश का नाम विवाह संस्कार है। हमारे शास्त्रों के अनुसार विवाह संस्कार एक अत्यन्त पवित्र और महत्वपूर्ण संस्कार है। विवाह-संस्कार का वैदिक क्रम इस प्रकार है -

(१) वर का स्वागत

विवाह के दिन संस्कार के समय जब वर वधू के घर मण्डप में उपस्थित होता है, उस समय वधू सबसे पूर्व 'मैं आप का स्वागत करती हूं ' ऐसा कहकर वर के गले में माला पहनाती है। माला अर्पण करने के पश्चात् वधू बैठने के लिए आसन देती है तथा खाने के लिए मधुपर्क देती है।

यह वस्तुत: दिनभर के कार्यों से थककर लौटे हुए पति की सेवा की विधि है। जब भी पति घर पर आएं, पत्नी को हंसते एवं मुस्कराते हुए उनका स्वागत-सत्कार करना चाहिए। घर में चाहे कितने ही नौकर-चाकर हों , परन्तु पति की सेवा पत्नी को स्वयं ही करनी चाहिए।

घर में आये हुए अन्य अतिथियों की सेवा भी इसी प्रकार करनी चाहिए।

(२) मधुपर्क

मधुपर्क में दही, शहद और घी का प्रयोग होता है। इनका अनुपात इस प्रकार है- दही तीन भाग, शहद दो भाग और घी एक भाग। इन तीनों को मिलाकर कांसे (glass) के पात्र में रखना चाहिए। यह एक टॉनिक है = रसायन, महौषधि है। इन तीन पदार्थों के गुण निम्न है -

दही का गुण - गर्म, अग्नि -दीपक, चिकना, बल और वीर्य को बढ़ाने वाला तथा वातनाशक है।

मधु का गुण- शीतल, मधुर, स्वादु, अग्नि वर्धक, फोड़ानाशक और कफ को दूर करता है।

घी का गुण - कान्ति, तेज, लावण्य, बुद्धिवर्धक, विष और पित्त नाशक।

बाकी अगले अंक में